गाड़ना गवंई तालाब व चारागाह की प्रबंधन व्यवस्था संभाले हुए हैं गांव के लोग

शामलात संसाधनों की सुरक्षा, सरंक्षण और प्रबंधन को लेकर आज भी सजग हैं गांव गाड़ना के लोग शामलात संसाधनों की व्यवस्था के लिए गांव में एकता है।

मुख्य मंडोलाई तालाब सहित आगौर व गौचर में कुल नौ नाडियां बनी हुई हैं। जिनका निर्माण ढलान व पानी के वेग को ध्यान में रख कर कराया। जिससे पशु चराई के साथ उनके पानी की व्यवस्था हो गई।

बजुर्ग बरसात के बहाव को देखते थे, पानी कहां रूकता है और जमीन सोखती नहीं है, वहां पर नाडी बनाने का निर्णय होता था। पूरा गांव नाडी खोदने के लिए आता था। पानी सभी की जरूरत होती थी, इस लिए सभी सहयोग करते थे। इस प्रकार तालाब बनते गए।

शामलात संसाधनों के जमीन का रिकॉर्ड लोगों के पास है। गांव ने सीमाज्ञान भी कराया है। अतिक्रमण भी छुड़वाया है। 800 बीघा गौचर व 450 बीघा नाडी, आगौर की जमीन है।

गौचर में छोटे पशुओं और बड़े पशुओं की अलग-अलग सीमा तय है। भेड़ बकरियों व गाय भैंसों के लिए अलग चराई व्यवस्था है। नियम तोड़ने पर जुर्माना लगता है।

तालाब में स्नान करना मना है। गंदगी, शौच आदि करने की मनाही है। गांव के लोग नियम मानते हैं। बाहर के लोगों को नियम बताते हैं।

गांव हाइवे नंबर 11 पर है। बाबा रामदेव मेले के 10 लाख पद यात्री यहां से गुजरते हैं तब गांव के लोग ध्यान रखते हैं। पद यात्रियों को नहाने व शौच आदि के लिए मना करते हैं।

तालाब के आगौर व गौचर से पेड़ काटने की सख्त मनाही है। केवल विलायती बबूल काट कर ले जाने की छूट है। लोगों ने बताया कि टहनी तक तोड़ना मना है। गांव के लोग नियम पालते हैं।

नहर के पानी का भरोसा नहीं है, यह गांव वाले समझते हैं। अंत में तालाब ही काम आएगा, इस लिए इसकी व्यवस्था करते हैं।

कंपनी वाले पानी उठाते हैं तो उनसे पैसे वसूल करते हैं। वह पैसा नाडी तालाब के विकास पर लगाते हैं।

परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाती है, उसकी आत्मा की शांति के लिए मिट्टी निकालने की परंपरा है।

पिछले दस सालों में बिलायती बबूल ज्यादा हो गए। इनको साफ करने के लिए हर साल चंदा कर, कटाई कराते हैं।

तालाब की पाल पर पशुओं को चढ़ाना मना है, ताकि पाल मजबूत रहे।

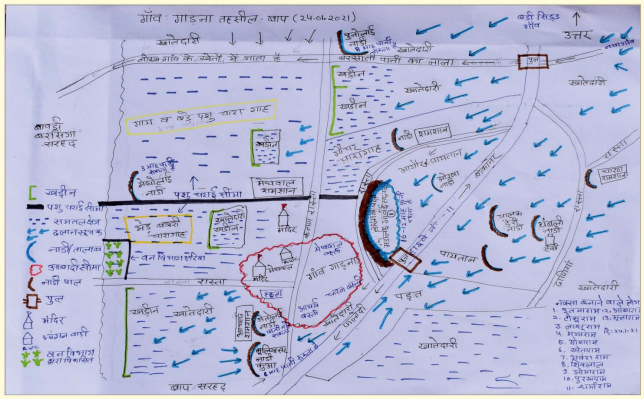

EUROPEAN UNION
Financial Support

ग्राविस

FES
FOUNDATION FOR ECOLOGICAL SECURITY

उन्नति
UNNATI